कुपोशण उन्मूलन योजना अन्तर्गत स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

प्राकृतिक खेती योजना अन्तर्गत कृषकों को बीजामृत बनाने हेतु ड्रम का प्रत्यक्षण

प्राकृतिक खेती में फसल सुरक्षा :

❖ **नीमास्त्र :** यह एक प्राकृतिक कीटनाशक है। यह रस चूसने वाले कीट एवं लीफ माईनर के नियंत्रण के लिए प्रभावी है।

बनाने की विधि : 5 किलो नीम की पत्ती, 100 ली0 पानी, 5 ली0 गौ मूत्र एवं एक किलो देशी गाय के गोबर को मिला लें। लकड़ी के डंटे से उसे घोले एवं 48 घंटे के बाद कपड़े से छानकर अपने फसलों पर छिड़काव करें।

❖ **ब्रहमास्त्र :** यह कीड़ों, बड़ी सुंडीयों के लिए प्रभावी है।
बनाने की विधि : 10 लीटर गौ मूत्र, 5 किलो नीम की पत्ती, 2 किलो सीताफल के पत्ते, 2 किलो सफेद धथुरा के पत्ते पीसकर गौ मूत्र में घोलें और ढ़ककर उबालें। 3–4 उबाल आने के बाद 48 घंटे तक ठंढ़ा होने दें फिर उसे कपड़े से छानकर किसी बर्तन में भरकर रख लें।
प्रयोग विधि : 100 लीटर पानी में 2–2.5 लीटर मिलाकर फसल में छिड़काव करें।

❖ **अग्निअस्त्र :** पेंड़ के तनों, फलों में रहने वाली सुंडीयों तथा सभी प्रकार के सुंडीयों और इल्लियों के लिए उपयुक्त।

बनाने की विधि : गौमूत्र 20 लीटर, हरी मिर्च 500 ग्राम (कुटी हुई), लहसन–500 ग्राम (कुटी हुई), नीम की पत्ती–500 ग्राम (कुटी हुई) को बड़े बर्तन में गौ मूत्र के साथ मिला लें और उबालें। 4–5 उबाल आने के बाद उतार लें फिर 48 घंटे बाद कपड़े से छानकर रख लें।

प्रयोग विधि – 100 लीटर पानी में 2–2.5 लीटर डालकर फसल पर छिड़काव करें।

धान की सीधी बुवाई

धान की सीधी बुवाई संसाधन संरक्षण खेती का एक तकनीक है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें बिना धान के नर्सरी तैयार किये सीधे बीज की बुवाई की जाती है।

अच्छी उत्पादकता के लिए बीज दर, बीज की गहराई, बुवाई का समय, बीजोपचार एवं खरपतवार नियंत्रण बहुत हीं महत्वपूर्ण कार्य है।

धान की सीधी बुवाई के लाभ

❖ नर्सरी उगाने एवं खेत की तैयारी में पानी की बचत।
❖ 7–10 दिनों की प्रारंभिक परिपक्वता।
❖ पौध रोपण, उखाड़ना एवं रोपाई के लिए श्रम की बचत।
❖ मृदा अपरदन में कमी।
❖ फसलचक्र एवं विविधिकरण को बढ़ावा।
❖ मीथेन उत्सर्जन एवं ग्लोबल बार्मिंग क्षमता में कमी।

आम के बगीचे में पोषक तत्वों का प्रबंधन –

1. 10 वर्ष से कम आयु के पेड़ में 25–30 किलोग्राम कम्पोस्ट या सड़ी गोबर की खाद, 500 ग्राम नेत्रजन, 150 ग्राम फॉस्फोरस, 350 ग्राम पोटाश/पेड़ की दर से व्यवहार करनी चाहिए।
2. 10 वर्ष से अधिक आयु के पेड़ में 35–40 किलोग्राम कम्पोस्ट या सड़ी गोबर की खाद, 1 किलोग्राम नेत्रजन, 300 ग्राम फॉस्फोरस, 700 ग्राम पोटाश/पेड़ की दर से व्यवहार करनी चाहिए।

उर्वरक डालने का उपर्युक्त समय : जुलाई माह में (फल तोड़ने के तुरंत बाद) साथ ही साथ पुरानी सुखी एवं रोगग्रस्त टहनियों की कटाई–छटाई भी आवश्य करें।

सहजन पत्ता : गुणों का भंडार

✓ पौष्टिक तत्वों से भरपूर मानव स्वास्थ्य के लिए एक दिव्य उपहार है।
✓ पौष्टिक और औशधीय गुणों के कारण इसका उपयोग कुपोशण, भुखमरी साथ ही साथ दुनिया भर में कई बिमारियों को रोकने और ठीक करने के लिए किया जाता है।
✓ इसे पशु चारा के लिए भी सस्ते विकल्प के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
✓ गर्भावस्था के दौरान लगभग 6 चम्मच सहजन पत्ते के पाउडर एक महिला के दैनिक आयरन और कैल्शियम आवश्यकताओं को पूरा करता है।
✓ सहजन पत्तियों में कैलोरी कम मात्रा मे होता है जिसके कारण यह मोटापे को कम करने मे उपयोगी है।
✓ एनिमिया के इलाज में सहजन पाउडर आयरन गोलियों के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

सहजन पत्तियों की पोशक तत्व संरचनाएं

पोषक तत्व	ताजा पत्तियां	सूखी पत्तियां
कैरोटीन (विटामिन ए) मिलीग्राम	6.78	18.9
प्रोटीन (जी)	6.2	29.4
विटामिन सी (मिलीग्राम)	220	15.8
कैल्शियम (मिलीग्राम)	440	2185
पोटेशियम (मिलीग्राम)	259	1236
आयरन (मिलीग्राम)	0.85	25.6

कृषि से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए विश्वविद्यालय का टॉल फ्री नं. 1800 345 6455 प्रातः 5.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक एवं फार्मर्स हेल्पलाईन : farmershelplinebausabour@gmail.com
किसान हेल्पलाईन नं. 18003456455 www.youtube.com/bausabour

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़, पटना
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर
patnakvk@gmail.com

द्वारा प्रकाशित तथा दीक्षाआर्ट एण्ड प्रिन्टस, पटना # 9431436534 द्वारा मुद्रित

कृषि विज्ञान केन्द्र,पटना

कृषक समाचार

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़, पटना

patnakvk@gmail.com

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

वर्ष 2024 | अंक – 02 | जुलाई से सितम्बर 2024

संरक्षक
डॉ० दुनिया राम सिंह
कुलपति, बि.कृ.वि., सबौर, भागलपुर

मार्गदर्शक
डॉ० अंजनी कुमार सिंह
निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (ATARI) पटना

डॉ० आर.के. सोहाने
निदेशक, प्रसार शिक्षा
बि.कृ.वि., सबौर, भागलपुर

प्रकाशक
डॉ० रीता सिंह
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9931312228

संपादक मंडल
डॉ० मृणाल वर्मा
9431266300
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियंत्रण

श्री राजीव कुमार
विषय वस्तु विशेषज्ञ, मृदा विज्ञान
9122763207

डॉ• पुश्पम पटेल
विषय वस्तु विशेषज्ञ, (उद्यान)
9123201061

संदेश

डॉ० डी आर सिंह
कुलपति, बि.कृ.वि., सबौर, भागलपुर

बिहार के माननीय मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में राज्य अपने कृषि रोड मैप के बलबूते इन्द्रधनुषी क्रान्ति लाने की तैयारी में है और इस दिशा में निरंतर सफलता मिलती जा रही है। कृषि रोड मैप के तहत कृषि प्रसार का मुख्य उद्देश्य कृषि ज्ञान एवं कौशल में परिवर्तन करना होगा जिसे अपनाकर किसान अपनी आय में बढ़ोत्तरी कर सकेंगे। कृषकों की सहभागिता की कड़ी को और मजबूत करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे किसान भाई अधिक से अधिक लाभ उठा सकेंगे। कृषि के विभिन्न उद्यम जैसे फसल उत्पादन, मधुमक्खीपालन, जैव खाद उत्पादन, पशुपालन, वानिकी, मशरूम उत्पादन इत्यादि को एक साथ इस प्रकार समायोजित किया जा रहा है कि वे एक दूसरे के पूरक हो जिससे संसाधनों की क्षमता, उत्पादकता एवं लाभप्रदता में पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए वृद्धि की जा सके। विश्वविद्यालय का प्रयास किसानों से एक रिश्ता कायम करने का है ताकि तकनीकी प्रसार को नया आयाम दिया जा सके। इस दिशा में विश्वविद्यालय के अन्तर्गत सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृशक प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण किये जा रहे हैं। साथ ही इन केन्द्रों द्वारा वीडियो कान्फ्रेन्सिग के माध्यम से किसानों को विश्वविद्यालय के मुख्यालय से जोड़ा जा रहा है, जिसकी सराहना राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है।

प्रकाशक की कलम से

डॉ रीता सिंह
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाढ़ पटना

कृषि विज्ञान केन्द्र, पटना द्वारा कृषक समाचार का यह अंक प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। जलवायु परिवर्तन एंव अनियमित मॉनसून के कारण किसानों को सही पैदावार प्राप्त नही हो पा रही है। खेती में टिकाउपन एवं उत्पादकता में वृद्धि के लिए कृषि में आधुनिक कृषि यंत्रो का उपयोग, मृदा स्वाथ्य प्रबंधन, समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, समेकित कीट व्याधि प्रबंधन, जल प्रबंधन के साथ–साथ पोषक अनाज की खेती एवं वैज्ञानिक तकनीक को अपनाना हमारा प्रमुख कदम होना चाहिए। जैव उर्वरकों एवं जैव कीटनाशी का प्रयोग करके मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाने की आवश्यकता है। खाद्य एवं पोशण सुरक्षा एवं किसान समृद्धि के मद्देनजर खेती से जुड़े व्यवसाय यथा मशरूम उत्पादन, केंचुआ खाद उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन एवं कृषिगत उत्पादों की गुणवत्ता युक्त प्रसंस्करण एवं विपणन कृषक समूह बनाकर करने की आवश्यकता है। साथ ही साथ ग्रामीण युवकों एवं युवतियों को अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन व्यवसायिक प्रशिक्षण देकर इन्हे स्वरोजगार की ओर अग्रसर करने हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र पटना निरंतर प्रयत्नशील है। प्राकृतिक एवं टिकाउ खेती की दिशा में कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा किसानों को समुचित मार्गदर्शन दिया जा रहा है साथ ही साथ सामुदायिक रेडियो स्टेशन के माध्यम से केन्द्र के 20 किलोमीटर रेडियस के क्षेत्रों के किसानों को पोषण संबंधी जानकारी दी जा रही है। प्रस्तुत अंक सम सामयिक कृषि कार्य के साथ खरीफ मौसम में प्रयुक्त होने वाली सही तकनीकी जानकारी प्रस्तुत कर रहा है जिससे पटना जिले के सभी कृषक बंधु लाभान्वित होंगे।

माननीय कुलपति बि.कृ.वि. सबौर द्वारा प्रगतिशील महिला कृषक का मशरूम बीज देकर सम्मानित करते हुए

माननीय कुलपति बि.कृ.वि. सबौर द्वारा मोटे अनाजों के स्टॉल का निरीक्षण

जुलाई माह के प्रमुख कृषि कार्य

- पहले से तैयार गड्ढ़ों में इस माह के अन्त तक नये बाग के लिए पौधे लगा दें। पपीता के पौधों की रोपाई करे।
- धान की विभिन्न अवधि वाले बिचड़े को तैयार होने के उपरांत उसकी क्रमबद्ध समयानुसार रोपनी करें।
- मक्का बुआई के 15–20 दिनों बाद निकौनी करें। मक्का में बाली निकलने के पहले नेत्रजन से उपरिवेशन करें।
- वार्षिक चारा के रूप में चारा घास नीची जमीन में (जहाँ पानी का जमाव होता है) तथा संकर नेपियर घास उँची जमीन में लगायें।
- मक्का की कीट–व्याधियों एवं फफूंदी रोगों से रक्षा करें।
- मिर्च का बीज गिरायें। बीज गिराने के पूर्व बीजोपचार कर लें।
- पशुओं के प्रमुख रोगों एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर एवं एच.एस. की रोकथाम हेतु अगर पशुओं को जून में टीके नही लगाये गये हो तो इस माह में अवश्य लगवा दें।
- कम अवधि वाले धान की सीधी बुआई इस माह के प्रथम सप्ताह में पूरी कर लें।
- इस माह के प्रथम सप्ताह में सबौर अग्रिम (फूलगोभी) का बीचड़ा तैयार करते हैं।
- अगात टमाटर के बीज की बुआई भी इस माह में करते हैं।
- करैला, लौकी, लोबीया, भिण्डी इत्यादि का भी बुआई इस माह में करते है।

अगस्त माह के प्रमुख कृषि कार्य

- धान की सुगन्धित किस्मों की रोपाई इस माह में पूरी कर लें। धान के रोपित खेतों में 10 किलोग्राम प्रति हे0 की दर से अल्गी कल्चर का प्रयोग करें। खेत में जल जमाव बनाये रखें।
- जुलाई माह में रोपे गये धान का नत्रजन से उपरिवेशन करें। धान की रोपनी के 45–50 दिनों बाद यूरिया का दूसरा उपरिवेशन करें।
- खरीफ मक्का में धनबाल निकलने के पूर्व नत्रजन की शेष मात्रा खरपतवार निकालने के बाद दे दें।
- चारा फसलों में निकाई–गुड़ाई एवं नेत्रजन से उपरिवेशन करें।
- बरसाती सब्जी में निकाई–गुड़ाई एवं समुचित जल–निकास की व्यवस्था करें तथा नत्रजन खाद से उपरिवेशन करें।
- मिर्च की रोपनी करें। जीवाणु खाद से बिचड़ों का उपचार अवश्य करें।
- पशुओं को वाह्य परजीवी से बचाने के लिए ब्यूटौक्स जैसी उपयुक्त दवाई पशु चिकित्सक के परामर्श से अवश्य दिलवायें।
- अगात फूलगोभी, टमाटर आदि का तैयार बीचड़े का रोपनी करें।

सितम्बर माह के प्रमुख कृषि कार्य

- कीट–व्याधियों से जून–जुलाई वाली अरहर के फसल की रक्षा करें।
- खरीफ मक्का की कटाई कर हथिया नक्षत्र की वर्षा के पहले ही खेत जोत दें।
- धान की निकाई करें। खेत में 5 सेंटीमीटर पानी लगा रहने दें।
- धान में खैरा रोग के लक्षण दिखाई दे तो 5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 2.5 किलोग्राम बुझे हुए चूना के साथ मिलाकर एवं 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करे।
- उड़द और मूंग फसल के पीला मोजैक से ग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें। इस माह में उड़द की कटाई एवं मूंग की अंतिम तोड़ाई पूरी करें।
- माह के मध्य तक रबी अरहर की बुआई अवश्य पूरी कर लें। बुआई के पूर्व बीजोपचार करें। राइजोबियम कल्चर का प्रयोग करें।
- रबी फसलों के लिए तैयारी प्रारंभ कर दें। अल्प अवधि की फसल तोरिया, अगात आलू एवं सब्जी की बुआई करें।
- मई के अंत तथा जून के प्रथम सप्ताह तक बोयी गई सभी भदही फसलों जैसे– धान, मक्का, मूँग, उरद तथा तिल आदि की कटाई, दौनी एवं भण्डारण करें।
- वर्शा ऋतु के अन्त में प्रत्येक पशु को कृमि निरोधक दवा अवश्य खिला दें।
- लगाये हुए सब्जियों में आवश्यकतानुसार 2–3 निकाई–गुडाई एवं खेत में नमी बने रहे इसके लिए हल्की सिंचाई करें।
- इस माह में गांठ गोभी एवं अगात पत्तागोभी की भी बुआइ करते हैं।

धान के प्रमुख रोग एवं निदान

तना छेदक कीट

तना छेदक धान का प्रमुख हानिकारक कीट है। इसका प्रकोप धान की नर्सरी से लेकर बाली आने की अवस्था तक देखा जाता है। इस कीट की इल्ली तने में छेद कर भीतरी भाग को खाकर नुकसान पहुँचाती है।

लक्षण : कल्ले का सूखना अथवा पुश्प गुच्छों (बालियों) का सफेद एवं दाना रहित होना इस कीट के प्रकोप के लक्षण है।

प्रबंधन :

- दानेदार कीटनाशी कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी, 24 कि.ग्रा. प्रति हे0 या कार्बोफ्युरान 3 जी, 30 कि.ग्रा. प्रति हे0 का प्रयोग फसल की वानस्पतिक वृद्धि की अवस्था में करें।
- पर्णीय छिड़काव हेतु, कार्बोसलफान 24 ई.सी., 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी या क्लोरोपायरिफॉस 20 ई.सी., 3 मि.ली. प्रति लीटर पानी या कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 50 एस.पी., 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर प्रयोग करे।

गालमिज :–

इस कीट का प्रकोप धान में कल्ले फूटने या वनस्पतिक वृद्धि की अवस्था में होता है। कीटग्रस्त पौधें से सामान्य कल्ले/पत्तियों के विकसित होने के स्थान पर लम्बी खोखली नालीदार (प्याज की पत्ती जैसी) संरचना दिखाई देती है जिसे सिल्वर शूट कहते है। इन कल्ले में बालियाँ नहीं लगती है। देरी से रोपी गई धान में इस कीट के प्रकोप की संभावना अधिक होती है। इस कीट से समस्याग्रस्त क्षेत्र या प्रकोप के आर्थिक क्षति स्तर पर होने की दशा में, दानेदार कीटनाशियों जैसे फोरेट 10 जी, 10 कि.ग्रा. प्रति हे0 या फिपरोनिल 0.3 जी., 24 कि.ग्रा. प्रति हे0 का प्रयोग किया जा सकता है।

माननीय कुलपति बि.कृ.वि. सबौर द्वारा सामुदायिक रेडियों स्टेशन बाढ़ पटना का भ्रमण

माननीय कुलपति बि.कृ.वि. सबौर द्वारा सामुदायिक रेडियों स्टेशन बाढ़ पटना का भ्रमण

माहू (फुदका):– भूरा माहू, धान के तने के निचले भाग में, पानी की सतह के ऊपर मौजूद रहकर पौधे से रस चूसता है। कीट का उग्र प्रकोप होने पर प्रभावित पौधें सूखने लगते है तथा काले–कत्थई भूरे रंग के दिखाई देते है इस प्रभावित क्षेत्र को हापर बर्न कहते है। सफेद पीठ वाला माहू धान के तने के उपरी भाग में रहकर, पौधों का रस चूसता है। हरा माहू कीट का प्रकोप सितम्बर–अक्टूबर मास में अधिक होता है। इसके अतिरिक्त यह कीट टुंग्रो रोग का वाहक होता है।

प्रबंधन :–

रासायनिक विधियाँ :– थायोमेथाक्सम 25 डब्लू.जी., 1 ग्राम प्रति 4 लीटर पानी या इथोफेनप्राक्स 10 ई.सी. का 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। धान के तने व पानी सतह के उपर पौधें के निचले भागों में कीटनाशी पहुँच सके इस प्रकार छिड़काव करें।

पत्ता मोड़क कीट :– पत्ता मोड़क कीट की चार प्रजातियाँ धान की फसल पर आक्रमण करती है पर नफालोक्रोसिस मेडिनालिस प्रजाति द्वारा अधिक नुकसान पहुँचाया जाता है। इस कीट का प्रकोप होने पर पत्ती सफेद धारीदार एवं मुड़ी हुई दिखाई देती है। इल्ली, लार्वा द्वारा स्रावित रेशमी धागों से पत्ती के किनारों अथवा दो पत्तियों को जोड़कर खोल बना लेती है और उसके अंदर रहकर पत्ती के हरे भाग (क्लोरोफिल) को खाती है। जिसके कारण पत्तियों में सफेद धारियाँ बन जाती है और अधिक प्रकोप होने पर पत्तियाँ सूख जाती है।

प्रबंधन :–

रासायनिक विधियाँ:– कीट की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने पर निम्न में से किसी एक कीटनाशी का छिड़काव किया जा सकता है।

- क्यूनालफॉस 25 ई.सी., 2–3 मि.ली. प्रति लीटर पानी
- थायोमेथाक्सम 25 डब्लू.जी., 2 ग्राम प्रति चार लीटर पानी
- इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल., 1 मि.ली. प्रति दो लीटर पानी

गंधी कीट :– गंधी कीट के कीटाणु एवं वयस्क दोनो ही पौधों, विशेषकर बालियों से रस चूस कर धान की फसल को नुकसान पहुँचाते है। दानों में दूध भरने की अवस्था में यह कीट अधिक सक्रिय हो जाता है और बालियों से दूधिया रस चूसना प्रारंभ कर देते है इस कारण बाली में दाना नहीं भरता अथवा कमजोर और सिकुड़े दाने बनते है।

प्रबंधन :–

रासायनिक विधियाँ :– कीट की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने पर निम्न में से किसी एक कीटनाशी का प्रयोग किया जा सकता है।

- धान की दूधिया अवस्था के प्रारंभ में इथोफेनप्राक्स, 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी
- मिथाइल पाराथियान 5% धूल, 25 किलोग्राम प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें।

हिस्पा कीट :– कीट की इल्ली (ग्रब) और वयस्क दोनों ही फसल को हानि पहुँचाते है। वयस्क कीट, पत्तियों के हरे भाग (क्लोरोफिल) को खुरचकर खाता है जिससे पत्तियों में मुख्य शिराओं के समानान्तर छोटी पतली सफेद धारियाँ बन जाती है।

प्रबंधन :–

रासायनिक विधियाँ:– कीटों की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से अधिक होने पर निम्न में किसी एक कीटनाशी का छिड़काव करें।

- थायोमेथाक्सम 25 डब्लू.जी., 1 ग्राम प्रति 4 लीटर पानी
- क्युनालफॉस 25 ई.सी., 2–3 मि.ली. प्रति लीटर पानी
- क्लोरोपायरिफॉस 20 ई.सी., 3 मि.ली. प्रति लीटर पानी
- ट्राइजोफॉस 40 ई.सी., 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी
- क्लोथाइनिडिन 50 डब्लू. डी.जी., 1 ग्राम प्रति पम्प (12–15 लीटर)

प्राकृतिक खेती

यह देशी गाय आधारित कृषि पद्धति है जिसमें एक देशी गाय से 30 एकड़ की खेती की जा सकती है।

प्राकृतिक खेती के स्तंभ

प्राकृतिक कृषि मोडल				
जीवामृत	बीजामृत	वाफसा	अच्छादन	मिश्रित खेती
देशी गाय				

बीजामृत

- बीजामृत बनाने की सामग्री (100 कि.ग्रा. बीज के लिए) पानी–20 ली0, देशी गाय का मूत्र–5ली0, देशी गाय का गोबर–5 कि.ग्रा., चूना– 50 ग्राम, मेड़ की मिट्टी– 1 मुट्ठी
- उपरोक्त सभी सामग्री को क्रमानुसार मिलाकर घोल तैयार करें। अच्छी तरह मिला देने के बाद इसे छाया में जूट की बोरी से ढ़ककर रख दें। 24 घंटे के बाद बीजामृत , बीज उपचार हेतु तैयार हो जाता है।

जीवामृत

- **सामग्री** : प्लास्टिक ड्रम–200 ली0 क्षमता का, देशी गाय का गोबर–8–10 कि.ग्रा., देशी गाय का मूत्र–5ली0, गुड–1.5–2.0 कि. ग्रा., बेसन–1.5–2.0 कि.ग्रा, पानी–180 लीटर, पेंड़ के नीचे की मिट्टी–आधा किलो
- उपरोक्त सभी समाग्री को प्लास्टिक ड्रम में डालकर लकड़ी के डंडे से घोलें। प्रति दिन सुबह शाम घोल को घड़ी की सूई की दिशा में लकड़ी के डंडे से चलायें। गर्मी के मौसम में जीवामृत 7 दिन एवं ठंड़ के मौसम में 8–15 दिन में उपयोग हेतु तैयार हो जाता है।
- जीवामृत को महिने में दो या एक बार उपलब्धता के अनुसार 200 लीटर/एकड़ के हिसाब से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।